International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 317-319

साहित्य का मुगल शासको के शासनकाल में विकास

डॉ0 केशरी नंदन मिश्र
एसो0 प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
मुगलों की राजभाषा फारसी थी अधिकांश साहित्य इसी भाषा में लिखे गये। यद्यपि बाबर की आत्मकथा तुर्की भाषा में लिखी गयी जो कि मुगल साहित्य पर उपलब्ध प्रमुख पुस्तक है। बाबरनामा/तुजुके बाबरी/बाकयाते बाबरी– बाबर की यह आत्मकथा तुर्की भाषा में लिखी गई। जिसमें उसके 1504–1529 तक का इतिहास है। बाबर भारत की आबोहवा की प्रशंसा करता है परन्तु यहाँ के लोगों की आलोचना करता है। इस पुस्तक की महत्ता के कारण :–

1. अकबर के समय में अब्दुर्रहीम खानखाना ने इसका फारसी भाषा में अनुवाद किया।
2. 1826 में लीडन एवं एर्सकिन ने फारसी से अंग्रेजी में अनुवाद किया।
3. 1905 में मिस्टर बेवरिज ने मूल तुर्की से इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

मूल शब्द : राजभाषा, राणासांगा, अफगान एवं फारसी भाषा।

प्रस्तावना
बाबर ने इस पुस्तक में 5 मुस्लिम राज्यों दिल्ली, बंगाल, मालवॉ, गुजरात व बहमनी तथा 2 हिन्दू शासको राणा सांगा व कृष्णदेवराय का वर्णन किया है।

तारीखे रशीदी–मिर्जा हैदर डोगलर
यह बाबर का रिश्तेदार था। हुमायूँ के काल में यह पुस्तक लिखी गई। इससे बाबर व हुमायूँ के बारें में जानकारी प्राप्त होती है।

हुमायूँनामा–गुलबदन बेगम
यह बाबर की पुत्री व हुमायूँ की बहन थी। अकबर के कहने पर यह पुस्तक लिखी गई। इसमें यह आरोप लगाया गया कि बाबर की मृत्यु इब्राहिम लोदी की माँ द्वारा जहर देने के कारण हुई। कानून–ए–हुमायूँनी–ख्वान्द मीर– हुमायूँ ने ख्वान्द मीर को अमीरे–अजवार की संज्ञा दी। इस पुस्तक में हुमायूँ के प्रशासन, नियमों आदि की जानकारी मिलती है। इसी से पता चलता है–

1. हुमायूँ को ज्योतिष का ज्ञान थाऔर उसने सप्ताह के सात दिनों में अलग–अलग रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाये।
2. हुमायूँ ने एक विशेषज्ञ प्रशासनिक अधिकारी अहल–ए–मुराद की नियुक्ति की जो नर्तक व नर्तकियों के वर्ग से थे।

हबीब–उत–सियाद–ख्वान्द मीर
यह संसार का सामान्य इतिहास है जिसमें दिल्ली सल्तनत से लेकर हुमायूँ तक का इतिहास वर्णित है।

दस्तूर चल–डमरा–ख्वान्द मीर
इसमें उमरा वर्ग का इतिहास है।

तारीखे–ए–हुमायूँनी–जौहर आफताब्वी
यह हुमायूँ का नौकर था। अकबर के कहने पर उसने यह पुस्तक लिखी, हुमायूँ के बारें में उल्लेख है।

तारीखे शेरशाही/तोहफा–ए–अकबरशाही
अब्बास खाँ सरवानी यह पुस्तक अकबर के कहने पर लिखी गई इसमें शेरशाह के प्रशासनिक, नियमों आदि की जानकारी मिलती है।

तारीखे दौदी– अब्दुल्ला आफ कोयल
इसमें अफगानों का इतिहास के लोदी व मुगल काल के शूर–अफगानों का वर्णन हें

तारीखे खान जेहानी–नियमामुत्तौला हरबाई
अफगानों का इतिहास

अकबर
सरकारी इतिहासकार–अबुल फजल राजकवि–फैजी (मलिक–उस–शोअरा)

अकबरनामा
अबुल फजल– यह अकबर पर सरकारी इतिहास है जो 7 वर्षों में पूर्ण हुई। इसके तीन भाग हैं इसका तीसरा भाग आइने अकबरी के नाम से प्रसिद्ध है।

आइने अकबरी
अबुल फजल– आइन का शाब्दिक अर्थ है नियम–कानून इससे अकबर कालीन नियम कानूनों को प्रशासन आदि की जानकारी मिलती है। इसी में कहा गया कि–

1. पादशाह खुदा का नूर और वह फर्र–ए–इज्दी है।
2. जो चित्रकला को पसन्द नहीं करते उन्हें मैं पसन्द नहीं करता।
3. सम्राट अपने मन मस्तिक में जिस स्थापत्य कला की रचना करता है उसे वह फतेहपुर सीकरी इमारत निर्माण के रूप में असली जामा पहना देता है।

मुत्तखब–उल–तबारीख–अब्दुल कादिर बदायूनी
बँदायूनी अकबर की धर्मिक नीति का कटु आलोचक था इसमें धार्मिक नीति की आलोचना की है।

तरीखे हकीकी–अब्दुल हक देहलवी
इस पुस्तक में भी अकबर की धार्मिक नीति का आलोचना की है।

दाबिस्तान–ए–मजाहिब–मोहसिन फैनी
इसमें फतेहपुर सीकरी में स्थित इबादित–खाना व उसकी धार्मिक चर्चाओं का वर्णन हैं

तबकाते अकबरी–निजामुद्दीन अहमद
यह हिन्दुस्तान का सामान्य इतिहास है इसमें मुगलकालीन नगरों का वर्णन है।

मुआसिरे रहीमी–अब्दुल वाकी
यह अब्दुल रहीम खानखाना के संरक्षण में लिखी गई।

फारसी में अनूदित पुस्तकें
अकबर ने एक अनुवाद विभाग का गठन फैजी की अध्यक्षता में किया। इसका उद्देश्य प्राचीन पुस्तकों का फारसी भाषा में अनुवाद करना।

1. रामायण– अकबर में कट्टर आलोचक बदायूँनी ने रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद रामनामा नाम से किया।
2. महाभारत– विश्व के इस सबसे बड़े महाकाव्य का फारसी भाषा में अनुवाद रज्मनामा नाम से विद्वानों के एक समूह द्वारा किया गया। जिसमें शमिल है–फैजी, नकीब खाँ, बदायूँनी व अबुल फजल।
3. पंचतंत्र–यह पुस्तक का फारसी भाषा में अनुवाद 2 नामों से किया गया–
   - अबुल फजल ने अनवारे–सुहैली नाम से फारसी में अनुवाद किया।
   - फैजी व नसकल्ला ने यार–ए–दानिश नाम से किया।
4. अर्थववेद– हाजी इब्राहिम सरहिन्दी।
5. लीलावती–गणित की इस पुस्तक का अनुवाद फारसी भाषा में फैजी ने किया।
6. नलदम्पत्ती– फैजी
7. तोजल–ज्योतिष की इस पुस्तक का फारसी भाषा मे अनुवाद मुकम्मल खाँ गुजराती ने किया।
8. सिंहासन बतीसी– बदायूँनी ने फारसी भाषा में अनुवाद नामा–ए–खिराद मफल नाम से।
9. राजतरंगिणी–मौलाना शाह मुहम्मद शाहावादी।
10. कालियादमन– अबुल फजल
11. हरिवंश–मौलाना गौरी

नोट
अकबर ने अनुवाद के लिए संस्कृत–फारसी शब्दकोश फारसी प्रकाश तैयार करवाया। इस प्रकार उसके समय में उपनिषदों को छोड़कर लगभग सभी महत्वपूर्ण पुस्तकों का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया। जबकि उपनिषदों का अनुवाद शाहजहाँ के काल में दाराशिकोह ने किया।

हिन्दी साहित्य
अकबर का काल हिन्दी साहित्य की दृष्टि से भी स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल के सबसे अधिक प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान अब्दुर्रहीम खानखाना थे जबकि महेशदास नामक ब्राह्मण बीरबल के नाम से प्रसिद्ध थे। उनकी उपाधि कविप्रिया थी। वे ब्रह्मा उपनाम से हिन्दी में लिखते थे। मानसिंह हिन्दी में लिखता था।

- रस पंचाध्यायी–नन्द दास
- चौरासी वैष्णव की वार्ता– विढ्ठल नाथ

रायमल अभ्युदय–पद्मसुन्दर– इसमें 24 जैन तीर्थकारों का वर्णन हैं अकबर शाही श्रृंगार दर्पण–पद्म सुन्दर।

रामचरितमानस (तुलसीदास)
अवधी भाषा में लिखित इस पुस्तक को ग्रियर्सन ने करोड़ों लोगों की एकमात्र बाइबिल कहा जबकि ग्राउज ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

संस्कृत भाषा
सर्वदेश वृतान्त संग्रह– महेश ठाकुर– ये दरभंगा के थे अकबर के काल में लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तक।

बांग्ला भाषा
अकबर के काल में बंग्ला भाषा में थी अनेक पुस्तके लिखी गई। जो निम्नलिखित हैः–

- चैतन्य चरितमामृतय–कविराज कृष्णदास
- चैतन्य भागवत–वृन्दावन दास
- भूक्ति रत्नाकर–नरसिंह चक्रवर्ती– नरसिंह को महापात्र की उपाधि दी गई।
- कवि कंकड चंडी–मुकुन्द राम चक्रवर्ती–इन्हें बंगाल का 'क्रैव' कहा जाता है।

प्रसिद्ध विद्वान
आइने अकबरी में 59 विद्वानों का उल्लेख है अकबर के काल में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति और विद्वान निम्नलिखित थे।

1. फैजी– अबुल फजल के बड़े भाई इन्हें 'राजकवि या मलिक' इस शोअरा की उपाधि दी गई।
2. गिजावली– फैजी के बाद इन्हीं की महत्ता था।
3. मु0 हुसैन– ये कश्मीर के थे बढ़िया सुलेख के कारण इन्हें 'जरी–कमल; की उपाधि दी गई।
4. श्री हरि– ये अकबरीय कालिदास के नाम से प्रसिद्ध थे।

जहाँगीर
सरकारी इतिहास
मोत मिदखान एवं जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुजुके जहाँगीरी के नाम से लिखी।

तुजुके–जहाँगीरी
यह जहाँगीर की आत्मकथा है जो उसके प्रारम्भिक 16 वर्षों का इतिहास है। उसे आगे बढ़ाने का कार्य मोतमिदखान और हादी खाँ ने किया।

मासिर–ए–जहाँगीरी
ख्वाजा कामगार धरियट खानं। यह पुस्तक शाहजहाँ के कहने पर लिखी गई।

- मुआसिरे रहीमी–मुल्ला नहबनदी
- मुकज्जम–ए–अफगानी–निमातुल्ला

शाहजहाँ

सरकारी इतिहासकार

अब्दुल हमीद लाहौरी एवं राजकवि–कलीम, पंडित जगन्नाथ। शाहजहाँ के काल में 3 पादशाहनामा लिखी :–

- पहला पादशाहनामा–मु0 अमीन कजनीनी
- पादशाहनामा–अब्दुल हमीद लाहौरी

इसे वास्तविक पादशाहनामा माना जाता है जो शाहजहाँ के काल का सरकारी इतिहास है।

- पादशाहनामा– मु0 वारिश
- शाहजहाँनामा–इनायत खान
- बहादुर चमन– पंडित चन्द्रभान
- अमले सालिह–मु0 सालिक
- तारीखे शाहजहाँनीह–खादिम खाँ

फारसी में अनूदित पुस्तकें

1. इब्नहरकरण ने रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद किया।
2. राजपूतकाल में लिखी गई एक पुस्तक प्रबोधचन्द्रोदय का फारसी भाषा में अनुवाद मुंशी बनवालीदास ने गुलजारे हाल नाम से किया।

हिन्दी साहित्य कवीन्द्र कल्पतरु

कवीन्द्राचार्य सरस्वती। कवीन्द्राचार्य सरस्वती बनारस के थे उन्होंने शाहजहाँ की प्रशंसा में कवीन्द्र कल्पतरु लिखा। इसी से प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने बनारस और इलाहाबाद में धार्मिक कर माफ कर दिया।

सुन्दर शृंगार, सिंहासन बलीसी, बारहमासा

सुन्दर कवि राय सुन्दर कविराय को महाकविराय की उपाधि दी गई।

कवित्त रत्नाकर (सेनापति)

सेनापति को भारत का 'वर्डसवर्थ' कहाँ जाता है। एवं कविप्रिया, रसिक प्रिया, अलंकारमंजरी, रामचन्द्रिका–केशवदास

संस्कृत साहित्य

बनारस के पण्डित जगन्नाथ शाहजहाँ के दरबारी विद्वान थे इन्होंने सस्कृत में रसगंगाधर व गंगालहरी जैसी पुस्तकें लिखी।

दाराशिकोह

लघु अकबर व शाह बुलन्द इकबाल' के नाम से प्रसिद्ध दाराशिकोह शाहजहाँ का सबसे बड़ा पुत्र था। उसके पास चित्रों का एक मुरक्का (एलबम) था। उसे मुगलकाल में सबसे बड़ी 60,000 मनसब प्रदान किया गया। वह अरबी व फारसी का ज्ञात था तथा 'कादरी' उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था। उसने बनारस के ब्राह्मणों से संस्कृत सीखी तथा उनकी मदद में भगवद्गीता व योगशिष्ठ का फारसी भाषा मे अनुवाद किया। उसने काशी के ब्राह्मणों की मदद से ही 52 उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद ''सिर्र–ए–अकबर अर्थात् महान फारसी भाषा में अनुवाद किया। उसने सूफियों पर प्रसिद्ध पुस्तक ''सफीनात–उल–औलिया एवं ''सकीनात–उल–औलिया' लिखी। उसने हिन्दू व मुस्लिम संस्कृति के समन्वय पर मजमुल बहरीन लिखा। जिसका शाब्दिक अर्थ दो समुद्रो का मिलन हैं।

औरंगजेब

सरकारी इतिहासकार–काजिम शिराजी एवं औरंगजेब ने सरकारी इतिहास व लेखन पर प्रतिबन्ध लगा दिया क्योंकि वह इसे धन और समय की बर्बादी मानता था परन्तु इतिहास की पुस्तके इसी के काल में लिखी गई।

मुन्तख्ता उल–लुबाब– मु0 हाशमी/खाफी खाँ

सरकारी इतिहास लेखन पर प्रतिबन्ध लग जाने के कारण यह पुस्तक राजदरबार में छिपाकर लिखी गई। इसमें बाबर से लेकर मु0 शाह तक का इतिहास है। इसी पुस्तक में कहाँ गया कि रैय्यत (आम जनता) मुगल नाम और कौम से डरती थी।

आलमगीरनामा– मु0 काजिम शिराजी

यह औरंगजेब के काल का सरकारी इतिहास है।

फतुहात–ए–आलमगीर–ईश्वरदास नागर

यह औरंगजेब का काल के 34 वर्षों का इतिहास है। इसमें राजपूतों के साथ उसके सम्बन्धों का उल्लेख है।

मासिर–ए–आलमगीरी–साकी मुस्तइद खाँ

इसमें मुगल अफसरों की नियुक्तियाँ और उनके तबादले आदि का उल्लेख है इसीलिए जदुनाथ सरकार ने इसे मुगलराज का 'गजेटियर' कहा।

नुश्क–ए–दिलकुश

भीमसेन कायस्थ, इसमें फौज की कमजोरी उनके भ्रष्टाचार, और किसानों द्वारा अपनी जमीन छोड़कर भाग जाने का उल्लेख है।

वाकयात–ए– आलमगीरी आकिल खाँ राजी

इसमें उत्तराधिकार के युद्ध का वर्णन है।

फतवाँ–ए–आलमगीरी

यह इस्लामी कानूनों का संग्रह है। जिसे औरंगजेब ने शेख निजाम की अध्यक्षता में विद्धानों के लिए समूह द्वारा तैयार करवाया।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि मुगलकालीन साहितय अत्यन्त समृद्ध था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिरीज मुस्वी – पीपुल, टैक्सेशन एण्ड ट्रेड इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2007
2. वसुधा डालमिया – रिलिजियस इन्ट्रक्वेशन इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशन, 2014
3. थामस एण्ड हडसन – मुगल इण्डियाः स्पेन्डर्स ऑफ द पीकॉक थ्रेन, वेलिरी बेरिस्टीन प्रकाशन, 1998
4. विलियम डार्किम्पल – द लास्ट मुगल
5. आर्थर अली – मुगन इण्डिया : स्टडीज इन पॉलिसी, आडियॉज, सोसाइटी एण्ड कल्चर, ओ0यू0वी0 इण्डिया प्रकाशन, 2008
6. आन्द्रे ट्रस्की – औरंगजेब : द मैन एण्ड द मिथ, पेग्विंन रैडंम हाउस इण्डिया प्रकाशन, 2017
7. एस0आर0 शर्मा – मुगल इम्पायर इन इण्डिया, रीड बुक्स प्रकाशन, 2007